वरदान मुँशी प्रेमचँद की कहानी

विन्ध्याचल पहाड़ रात के अन्धेरे में काल (le Temps) देव की तरह खड़ा था। उस पर उगे हुए छोटे-छोटे पेड़ इस प्रकार दिखाई देते थे, मानो ये उसकी जटाएं (mèches) है और अष्टभुजा (à 8 bras) देवी का मन्दिर जिसके शिखर (cime) पर सफ़ेद पताकाएं (drapeaux) हवा में लहरा रही थीं, उस देव का सिर है । मंदिर में एक चमकता हुआ दीपक था, जिसे देखकर लगता था वह कोई धुंधला तारा है ।

(चुकी - ओर - छाया था। - बीत - आधी रात - थी। - हुआ – चारों – सन्नाटा –) . *गंगाजी की काली तरंगें (flots) पहाड़ के नीचे बह रही थीं। उनके बहाव से एक सुरीले राग की ध्वनि निकल रही थी। नावों पर और किनारों के आस-पास मल्लाहों (pêcheurs) के चूल्हों की आग दिखायी देती थी। ऐसे समय में एक सफ़ेद साड़ी पहनी हुई स्त्री अष्टभुजा देवी के सामने हाथ बांधे बैठी हुई थी*। उसका चेहरा पीला था । उसने देर तक सिर झुकाये रहने के बाद कहाः

'माता ! आज बीस वर्ष से कोई मंगलवार ऐसा नहीं गया जबकि मैंने तुम्हारे चरणो पर सिर न झुकाया हो। एक दिन भी ऐसा नहीं गया जबकि मैंने तुम्हारे चरणों का ध्यान न किया हो। तुम विश्व की महारानी हो। तुम्हारी इतनी सेवा करने पर भी मेरे मन की इच्छा पूरी न हुई। मैं तुम्हें छोड़कर कहां जाऊ ?'

'माता! मैंने हज़ारों व्रत रखे, देवताओं की पूजा की, तीर्थयाञाएं की, परन्तु मेरी मांग पूरी न हुई। तब तुम्हारे पास आयी। अब तुम्हें छोड़कर कहां जाऊं ? तुमने सदा अपने भक्तो की इच्छाएं पूरी की है। क्या मैं तुम्हारे दरबार से निराश हो जाऊं ?'

सुवामा (nom propre) इसी प्रकार देर तक प्रार्थना करती रही। अचानक उसके मन पर किसी अजीब शक्ति का आक्रमण हुआ। उसकी आंखें बन्द हो गयीं और कान में ध्वनि आयी।

'सुवामा! मैं तुझसे बहुत प्रसन्न हूं। मांग, क्या मांगती है?

सुवामा को बड़ी खुशी हो गयी। उसका दिल धड़कने लगा। आज बीस वर्ष के बाद महारानी ने उसे दर्शन दिये। वह कांपती हुई बोली 'जो कुछ मांगूंगी, वह महारानी देंगी' ?

'हां, मिलेगा।'

'मैंने बड़ी तपस्या की है इसलिए बड़ा भारी वरदान मांगूगी।'

'क्या लेगी कुबेर का धन'?

'नहीं।'

'इन्द्र का बल।'

'नहीं।'

'सरस्वती की विद्या ?'

'नहीं।'

'फिर क्या लेगी ?'

'संसार का सबसे उत्तम पदार्थ (produit)।'

'वह क्या है ?'

'सपूत बेटा।' (सपुत= अच्छरा पुत्र)

// 'जो कुल का नाम रोशन करे ?'

'नहीं।'

'जो माता-पिता की सेवा करे?'

'नहीं।'

'जो विद्वान और बलवान हो ?'

'नहीं।'

'फिर सपूत बेटा किसे कहते हैं ?'

'जो अपने देश की सेवा करे।' //

'तेरी बुद्वि को धन्य है। जा, तेरी इच्छा पूरी होगी ।'

1. Questions sur le texte « Vardan »

1. A quoi est comparé le temple ? Quelle atmosphère dégagent les comparaisons ? 2. Donnez trois détails du portrait de Suvama, Que signifie son nom 3.. Quel jour Souvama va-t-elle se

prosterner aux pieds de la Déesse ? 4. Quelles sont les trois dons que Suvama refuse ? 5. Quel est l'objet de ses vœux et comment le définit-elle ?
6 Quel est le sens général de ce poème d'après vous ? 7. Comment le situez-vous dans l'œuvre de son auteur (renseignez-vous sur Premchand : encyclopédies, dont celle de la Sahitya Akademi, ouvrage de Gaeffke, etc. ? 8 Comment le situez-vous dans son époque historique ? 9 plus de lectures (fursat mile to…) : Le Suaire (POF, C. Thomas Weinberger), Délivrance (L'Harmattan, F. Ouellett), Le Don de la Vache (L'Harmattan, f. Ouetlett)

2. Grammaire : 1. A quel temps et mode sont les verbes dans la seconde partie du dialogue (entre //). Pourquoi ? 2. Expliquez la construction et le sens des deux phrases suivantes : बाहर से दरवाज़ा खींच लो, ताला मुझसे नहीं खुल रहा है ; मुझसे जो कुछ बना, किया। जहां तक मुझसे बना, किया। अब मुझसे नहीं होगा ; मुझसे गिलास गिरा

3 . Traduisez les passages en italique